किसान जीवन का जीवन्त दस्तावेज 'अकाल में उत्सव'

पवित्रा देवी

सारांश

किसान शब्द वर्तमान समय का सबसे ज्यादा डरावना और भयावह शब्द बनता जा रहा है जिस किसान वर्ग को कभी अन्नदाता कहकर महिमामण्डित किया जाता था आज वही अर्थव्यवस्था की भेंट चढता जा रहा है किसानों की बदहाली का मुख्य कारण सरकार द्वारा किसानों की उपेक्षा करना है। वर्तमान समय मे नवउदावादी नीतियो के स्थापित होने के कारण उद्योगपतियो और पुंजीपतियो को बेतहासा लाभ हुआ है किसान वर्ग का प्राकृतिक आपदाओ से भी सामना हुआ है सुखा, ओला और बाढ किसान जीवन के जन्मदाता शत्रु है लेकिन सरकार ऐसी स्थिति मे भी किसानो को समझने के बझाय उनकी स्थिती पर छोड देती है सरकार का नीतियाँ उल्टे किसान के जीवन की गले की फाँस बन गई है। किसान की आत्महत्या और उसकी मौंत के आँकडे भी स्वभाविक घटना सी जान पडती है सरकार किसान जीवन के प्रति सवेदहीन होती जा रही है।

आज का भारत प्रेमचन्द युग से काफी बदला हुआ है । मनुष्य अब उतना सामाजिक नहीं रहा है नब्बे के दशक में भारत सरकार द्वारा जो नई आर्थिक नीति लागू की गई थी उसमे समाज के प्रत्येक क्षेत्र मे परिवर्तन हुआ परन्तु किसानो के जीवन शैली मे कुछ आवश्यक बदलाव नही दिखाइ दिया उसके साथ ही उदारवाद और बाजारवाय का जन्म हुआ और इसी कारण साहित्य लेखनद मे नई शैली का विकास हुआ। आज कॉर्पोरेट कम्पनियों का निरंतर विकास होता जा रहा है। सरकार आज जमीनो का अधिकरण करने मे लगी हुई है किसान जीवन के विकास मे सामाजिक व्यवस्था सभ्यता और संस्कृति के सविधान और विकास के लिए रूपया की महत्वपूर्ण भूमिका होती है भारत देश एक कृषि प्रधान देश है आज भी 70 प्रतिशत आबादी जीवनयापन करने के लिए कृषि को अपना आधार बनाया है समय की मांग को देखते हुए कृषि के उत्पादन मे परिवर्तन होना जरूरी है। भारत देश मे हरित क्राति होने से कृषि उत्पादन मे काफी बदलाव आया है परन्तु आज सन्दर्भ मे भी किसान शोषित और पीडित होता जा रहा है।

भारतीय कृषि प्रणाली की सबसे बडी विडबना का दस्तावेज है कि जब भी किसान का कृषि उत्पाद बाजार मे आता है तो उसका मूल्य गिरने लगने लगता है मध्यस्थ सस्ती दरो पर खरीद लेते है जिससे कृषि घाटे का सौदा बनती जा रही है किसानो की फसलो तथा उत्पादो का मूल्य सरकार तथा क्रेता द्वारा निर्धारित की जाती है फिर भी किसान अपनी फसल के कारण किसान असह्य ही दिखाई देती है जब भी हम किसान के बारे मे सोचते है तो उसका चेहरा चिंता ग्रस्त, पीडा ग्रस्त,सत्रासमे भरा दिखाई देता है अगली आने वाली फसल के बीज खाद के दाम पानी की चिंता, बेटा बेटी के विवाह की चिंता पिछला कर्ज चुकता करने की चिंता कितने ही अनगिनत प्रश्न उनके दिमाग मे चलते रहते है उन्ही दस्तावेजो का आकलन, अकाल मे उत्सव उपन्यास मे पकज सुबीर ने अपने मार्मिक दृष्टिकोण से चित्रित किया गया है भारतीय अर्थव्यवस्था का प्रमुख आधार कृषि और किसान है किसान ही पूरी अर्थव्यवस्था को चलाने के लिए जिम्मेदार है लेकिन वह बाजारवाद के दौर मे वह हाशिए पर चलाया गया है उसे अपनी ही फसल का उचित मूल्य नही मिल पाता है, क्योकि एक किसान कर्ज से घिरे होने के कारण खाद बिजली और पानी की समस्याओ से घिरा हुआ होता है। अगर किसान को उसकी फसल का उचित मूल्य नही मिल पाता है तो आत्महत्या करने की कगार पर पहुचँ जाता है आए दिन किसानो की आत्महत्या की खबर सुनते रहते है वह सरकार की नीतियों से भी किसान जीवन संकटग्रस्त रहता है जब श्री राम परिहार रामप्रसाद नामक किसान आत्महत्या के विषय मे पूछताछ करता है तब उसको बताया जाता है कि उसकी फसल ओलावृष्टि के कारण बर्बाद हो गई थी जिसके कारण उसे न तो मुआवजा मिल पाया और न ही सर्मथन मूल्य मिल पाया किसान अपनी आत्महत्या खुशी से नही करता बल्की पर कई सामाजिक अडचनो का प्रभाव रहता है।

इस प्रकार स्पष्ट रुप से कह सकते हैं कि किसान जीवन कई सामाजिक, प्राकृतिक, राजनीतिक और आर्थिक विपदाओ मे से घिरा हुआ है। आज के सन्दर्भ मे किसानो के लिए मुआवजे की समस्या एक गम्भीर समस्या बनी हुई है सरकार आज भी किसानो के लिए मुआवजे के लिए संवेदनहीन दिखाई नहीं देती। प्रत्येक सरकार इस गम्भीर समस्या को फालतु की चीज मानती है और और मजबूरी मे किसानो को मुआवजा देती है। इसके पीछे भी कई कारण निहित है भविष्य मे अपनी सरकार लाने या विपक्ष की सरकार को नीचा दिखाने के लिए करती है। सरकारो की यह वास्तविकता होती है कि शहरीकरण मे औद्योगीकरण को बढावा देने के नाम पर न जाने कितनी भूमि को अधिकृत करती है और बहुराष्ट्रीय कम्पनियो को मनचाहे दामो पर बेच दी है।

जब मुआवजा देने का समय आता है तो सरकार बहुत कम भाव से किसानो को उनकी जमीन का मुआवजा दिया जाता है यह कैसी विडम्बना है। इस समस्या को पंकज सुबीर ने रामप्रसाद नामक किसान के माध्यम से चित्रित किया है रामप्रसाद की फसल जब ओलो के कारण बर्बाद हो जाती है तब वह अपनी फसल का भुगतान सरकार से मागती है तो पह पीडित सा अनुभव करता है इस विषय पर राकेश पांडे और रमेश चौरासिया आपस मे आपस मे ग्रांट खच्च करने की प्रकिया का निर्धारण करते है तो किसान मुआवजे की समस्या पर चर्चा करती है किसानो को सिर्फ धक्का, गालियाँ, अपमान, उपाक्षित और जब मुआवजा मिलता है तब तक किसान ही जा चुका होता है इतनी लिखा पढी होती है। जो कि इस उपन्यास मे राकेश पाण्डे नामक पात्र

Scanned with OKEN Scanner